ISSN No. 2349-4654
नाद – नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 1, अंक : 1, नवम्बर 2014

# प्रमुख संगीत निर्देशकों के गीतों में संगीत सौन्दर्य विवेचना

**रंजना रानी**

*शोध छात्रा, संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़*

## सार-संक्षेप

*फिल्म संगीत के प्रारम्भ से ही इसमें शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीतों का प्रचार अधिक हुआ। फिल्म संगीत में कई दिग्गज संगीतज्ञ हुए जिन्होंने ऐसा संगीत दिया जो कि आज तक सुना जा रहा है। उनके द्वारा बनाई गई धुनें आज भी सुनने में मधुर लगती हैं व थके दिमाग को ताजा कर सुकून का आभास देती है। 1950 से 1980 तक फिल्म संगीत में बहुत सी रचनाएं शास्त्रीय संगीत पर आधारित मिलती हैं परन्तु 1980 के बाद 1990 तक शास्त्रीय संगीत पर आधारित रचनाओं का बनना कम हो गया। 1990 से 2000 तक यही चलता रहा। फिर 2000 से 2010 तक ऐतिहासिक फिल्मों के निर्माण के कारण कुछ फिल्में बनी तथा जिनमें आधुनिक संगीतकारों ने अच्छा कार्य किया व राग आधारित धुनों का निर्माण किया। परन्तु 2010 से लेकर अब तक जो संगीत आ रहा है उसे तो संगीत की दुर्दशा का समय कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इस समय में संगीत के नाम पर केवल धम-धम सुनाई देती है। पाश्चात्यकरण का असर पूरी तरह फिल्म संगीत पर दिखाई देता है। आज के संगीतकारों को पाश्चात्यकरण की ओर रूख न करके अपने शास्त्रीय संगीत रूपी अमूल्य धरोहर में रचनाएं रच कर इसका प्रचार प्रसार करना चाहिए और अपनी कलात्मक उत्कृष्टता का परिचय देना चाहिए। प्रस्तुत शोध-पत्र में कुछ संगीत निर्देशकों द्वारा रचित राग आधारित गीतों की चर्चा की गई है जिसमें यह बतलाया गया है कि वे किन रागों पर आधारित हैं। वर्तमान समय के संगीत पर भी चर्चा की गई है।*

## शोध-पत्र

संगीत प्रचार के सर्वोत्तम माध्यम के रूप में फिल्म संगीत बहुत महत्त्वपूर्ण है। मनोरंजन के सर्वोत्तम माध्यम के रूप में फिल्में हमेशा लोकप्रिय रही हैं जिस कारण इसका संगीत जन मन को आकर्षित करने में हमेशा सफल रहा है। फिल्म के संगीत का निर्माण करने का कार्य जो व्यक्ति करता है वह संगीत निर्देशक कहलाता है।

प्रारम्भिक फिल्मों में जो गीत प्रचार में आए वे अधिकांश शास्त्रीय संगीत पर आधारित थे। शास्त्रीय संगीत से अभिप्राय उस संगीत से है जिसमें संगीत के आधारभूत तत्वों स्वर, लय, राग आदि की विधिवत् शिक्षा दी जाती है तथा व्यक्ति की सांगीतिक रचनात्मकता का विकास किया जाता है। फिल्मी संगीत में शास्त्रीयता केवल वहीं तक मिलती है जहाँ तक वह जन रंजन करने में समर्थ हो। विभिन्न पटकथा के अनुसार भावाभिव्यक्ति के अनुकूल रागों का प्रयोग फिल्म संगीत में बखूबी सुनने को मिला। उस जमाने के संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत विधिवत् सीखा भी तथा गीत की धुनें भी वे शास्त्रीय आधार पर ही बनाते जिसे श्रोता पसन्द भी करते थे। शास्त्रीय संगीत का प्रयोग फिल्म संगीत में दो तरह से हुआ एक जिसमें यथासंभव राग को उसके शुद्ध रूप में आलाप, तान आदि से युक्त शास्त्रीय शैली में प्रस्तुत किया गया हो व दूसरा जिसमें गीत किसी राग पर केवल आधारित हो जिसमें कठिन आलाप-तान आदि कठिन तरीके से न लेकर सरल ढंग से गाया हो। वैसे तो हिंदी फिल्मों में कई अच्छे-अच्छे संगीतकार हुए परन्तु उनमें कुछ संगीत निर्देशक जैसे नौशाद, रोशन, वसंत देसाई, एस.डी.बर्मन, शंकर जय किशन, मदन मोहन, खैय्याम के नाम उल्लेखनीय हैं जिनके द्वारा दिए गए संगीत के कारण युगों तक संगीत जगत उनका आभारी रहेगा। इनमें से कुछ संगीत निर्देशकों ने न केवल शास्त्रीय संगीत सीखा बल्कि उस संगीत के प्रति अपनी समझ, अपनी रचनात्मक क्षमता को इस तरह से प्रयोग किया कि वह जन मानस का प्रिय संगीत हो गया। जो गीत उन्होंने जिस राग में रचा वह गीत उस राग का सशक्त उदाहरण बन गया। फिल्म निर्माण के प्रारम्भ में जो फिल्में बनी उनका विषय पौराणिक, ऐतिहासिक कथाएं थी फिर साहित्य तथा संस्कृति प्रदर्शित करती उपन्यासों पर आधारित फिल्में भी बनीं तथा कुछ फिल्मों का विषय ही संगीत था तो संगीत भी फिल्म की पटकथा के अनुसार ही था जिनमें भावानुभूति के लिए यथासंभव रागों का प्रयोग भी किया गया। यदि हम 1950 से 1970-80 तक के दशक को फिल्म संगीत का 'स्वर्ण युग' कहे तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। संगीत निर्देशकों द्वारा अनेक फिल्मों में बहुत अच्छा संगीत दिया गया। उनके द्वारा दिए गए संगीत की कुछ फिल्मों का विवरण निम्नलिखित हैं—

संगीत निर्देशक 'नौशाद जी' अपने समय के उन दिग्गज निर्देशकों में से हैं जिनका संगीत न केवल शास्त्रीय दृष्टिकोण से खरा उतरा बल्कि उनके संगीत के लिए शास्त्रीय कलाकारों ने भी गाना पसन्द किया। फिल्म 'बैजू बांवरा' का गीत 'आज गावत मन मेरो झूम के' जो कि 'राग देसी' में रचित है तथा जिसे 'अमीर खां' तथा 'डी. वी. पुलस्कर' द्वारा गाया गया तथा 'मन तड़पत हरि दर्शन को' आज जिस तरह से 'राग मालकौंस' में रचा गया तथा जिस आत्मीयता के साथ 'मोहम्मद रफी' ने गाया उसी का परिणाम है कि आज तक यह गाना लोगों द्वारा सुना जाता है। न केवल यह गाना पसन्द किया जाता है बल्कि जो व्यक्ति संगीत के शास्त्रीय ज्ञान से अनभिज्ञ हैं उसके लिए तो राग मालकौंस ही 'मन

तड़पत' हो गया। अर्थात लोग इस तरह से रागों को पहचानने लगे कि मालकौंस राग वही है जिसमें यह गाना ' मन तड़पत' रचित है। इसी तरह 'मुग़ले-आज़म' का गीत 'मोहे पनघट पे नन्द लाल' 'राग पीलू' में हो या फिर 'बड़े गुलाम' द्वारा गाया गीत 'शुभ दिन आयो री' राग रागेश्वरी में, वे 'प्रेम जोगन बनके' 'राग सोहनी में' सभी नौशाद की अमर कृतियों में शामिल है। फिर 'कोहिनूर' फिल्म का गीत 'मधुबन में राधिका नाचे रे' जो कि 'राग हमीर' में रचित है। तबला तथा सितार के प्रयोग के साथ इसमें तराना का बहुत सुंदर प्रयोग है, ऐसी अविस्मरणीय रचनाओं के लिए नौशाद को हमेशा याद किया जाएगा।

शास्त्रीय संगीत के रागों के खजाने का प्रयोग फिल्म संगीत निर्देशकों ने अनूठे ढंग से किया। 'वसन्त देसाई' भी फिल्मों में शास्त्रीय संगीत देने के लिए प्रसिद्ध रहे। 'गूंज उठी शहनाई' का गीत 'मेरे सुर और तेरे गीत' जो कि 'राग बिहाग' में रचा गया। 1971 में आई गुड्डी फिल्म का गीत 'बोले रे पपीहरा' राग 'मियां मल्हार' पर आधारित है। 'गूंज उठी शहनाई' में विस्मिल्लाह खां द्वारा बजाई गई शहनाई को कौन भूल सका है। शास्त्रीय गीतों के साथ-साथ अर्थपूर्ण गीत देने में भी उनका योगदान है जैसे 1951 में फिल्म 'दो आंखे बारह हाथ' का गीत 'ए मालिक तेरे बन्दे हम' गीत आज तक स्कूलों में प्रार्थना गीत के रूप में गाया जाता है।

संगीतकार 'रोशन' जिन्होंने उस्ताद अलाउद्दीन खाँ जी से संगीत सीखा तथा साथ ही सारंगी बजाना भी सीखा।[2] उन्होंने चित्रलेखा, ताजमहल, दिल ही तो है, राग रंग जैसी अनेक फिल्मों में शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ माधुर्य भरा संगीत दिया। ये संगीतकार परम्परागत बंदिशों के प्रयोग में बहुत निपुण थे—जैसे इसका एक उदाहरण फिल्म 'चित्रलेखा' का गीत 'एरी जाने न दूंगी' जो कि राग कामोद पर आधारित है। 'काहे तरसाए जियरा' राग कलावती में, 'मन रे तूं काहे न धीर धरे' राग यमन में, फिल्म 'राग रंग' में 'ए री आली' राग यमन में 'दिल ही तो है' का गाना 'लागा चुनरी में दाग' जो कि 'राग भैरवी' में रचित है। 'मन्नाडे' द्वारा गाए गए इस गीत में शास्त्रीय गायन शैली तराना का बहत सुन्दर प्रयोग सुनने को मिलता है। रोशन द्वारा दिया गया संगीत, संगीत प्रेमियों के हृदय पर अमिट छाप छोड़ने वाला था।

एस. डी. बर्मन जो कि मूलत: बंगाल के हैं उन्होंने अपने संगीत में शास्त्रीय संगीत और लोक धुनों का बहुत सुन्दर मिश्रण प्रस्तुत किया। चाहे वो 'आराधना' फिल्म का गीत 'ढोली में उठाए के कहार' लोक गीत पर आधारित रचना हो या फिर 'मेरी सूरत, तेरी आंखे' फिल्म का गीत 'पूछो ना कैसे मैने रैन बिताई' जो कि राग 'अहीर भैरव' पर आधरित है। इसी तरह का गीत 'डॉ. विद्या' का गीत 'पवन दीवानी' जो कि 'राग बहार' में है तथा जिसमें द्रुत एक ताल तथा सरगम के प्रयोग से रचना को और आकर्षक बनाया गया। बुज़दिल फिल्म का गीत 'झन-झन झन-झन पायल बाजे' जो कि राग 'नट बिहाग' पर आधारित है अनेक तरह के राग आधारित गीतों के साथ 'चुपके-चुपके', 'अभिमान' आदि जैसी फिल्मों में दिल को छूने वाला संगीत दिया।

फिल्म 'स्वर्ण सुन्दरी' में 'आदिराव नारायण' ने गाने 'कुहू कुहू बोले कोयलिया' में राग सोहनी, बहार, यमन का जितना सुंदर मिश्रण प्रस्तुत किया है वह किसी साधारण सोच का परिणाम नहीं है बल्कि उनकी मेहनत, लगन तथा कुशाग्र बुद्धि का परिचायक है।

संगीतकार जोड़ी 'शंकर जयकिशन' ने भी अनेक फिल्मों में अनेक रागों पर आधारित कभी न धूमिल होने वाला संगीत दिया। इन्होंने 'मेरे हजूर' फिल्म का गाना 'झनक-झनक तोरी बाजे पायलिया' जो कि 'राग अड़ाना' पर आधारित है। 'जाने अनजाने' फिल्म का गीत 'छम-छम बाजे रे पायलिया' जो कि 'राग चंद्रकौंस' व 'राग जयजयवन्ती' का मिश्रण है। सीमा फिल्म का गीत 'मनमोहना बड़े झूठे' जो कि 'राग जयजयवन्ती' में है 'सांझ और सवेरा' फिल्म का गीत 'अजहूं न आए बालमा' जो कि 'सिन्धी भैरवी' पर आधरित है तथा 'आरजू' फिल्म का गीत 'बेदर्दी बालमा' जो कि 'राग चारूकेशी' पर आधारित है आदि गाने दिए।

इन्हीं संगीतकारों में 'मदन मोहन' जी का भी अविस्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने अनेक रचनाएं रागों पर आधारित दी जिनमें फिल्म 'दुल्हन एक रात की' का गीत 'मैंने रंग ली आज चुनरिया' राग पीलू में, फिल्म 'अनपढ़' का गाना 'जिया ले गयो जी' राग यमन में, 'मेरा साया' फिल्म में शीर्षक गीत 'मेरा साया' जो कि 'नन्द राग' पर आधरित एक उत्तम रचना मानी जाती है। फिर 'देख कबीरा रोए' का 'मेरी वीणा तुम बिन रोए' राग अहीर भैरव में, 'हकीकत' का गाना 'जरा सी आहट' राग यमन में आदि है। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा बनाई गई ग़ज़लें है। 'जो हमने दास्तां अपनी सुनाई', 'यूं हसरतों के दाग' फिल्म 'अदालत' से 'लग जा गले के फिर' ये फिल्म 'वो कौन थी' से में दिल को छूने की अद्भुत क्षमता है। राग बहार में रचित 'जहाँ आरा' फिल्म की ग़ज़ल 'वो चुप रहे तो मेरे दिल के दाग' और फिल्म 'दिल की राहें' की ग़ज़ल 'रस्में उल्फ़त को निभाएं' में 'राग मधुवंती' का बहुत सुन्दर प्रयोग है। न केवल इस समय में बल्कि 2004 में भी जब उनकी बनाई हुई धुनें 'वीर ज़ारा' में प्रयोग की गई तो हर तरफ 'वीर ज़ारा' के गीतों की सफलता की चर्चा थी। इन संगीतकारों ने नट बिहाग, नन्द, चारुकेशी जैसे अप्रचलित रागों में गीतों की रचना कर इन रागों को भी प्रचलित कर दिया।

1948 से लेकर 2013 तक सक्रिय रूप से संगीत देने वाले दिग्गज कला संगीतज्ञों में एक ओर संगीतज्ञ जिनको 'खैय्याम' के नाम से जाना जाता है, का भी योगदान है उनके द्वारा बनाई गई धुनों में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग भी बहुत ही सुन्दर तरीके से मिलता है। रागों का सरल तरीके से प्रयोग इनके संगीत की एक एक अलग विशेषता है। उनकी बनाई गई हर धुन में एक नयापन है। उनकी कुछ रचनाएं हैं जैसे —'आख़िरी ख़त' फिल्म का गाना 'बहारों मेरा जीवन भी संवारों' जो कि 'राग पहाड़ी' में रचा गया है। 'शिवकुमार शर्मा' जी ने सन्तूर का जो वादन किया है वह इस गाने के सौन्दर्य को और बढ़ा देता है। फिल्म 'कभी-कभी' का

शीर्षक गीत जो कि 'राग पहाड़ी' तथा यमन में है। फिल्म 'बाज़ार' का गीत 'ज़िंदगी जब भी तेरी बज़्म में' जो कि राग 'गौड़ सारंग' में बड़े ही सुन्दर तथा सरल ढंग से रचा गया है। इसके अतिरिक्त 'उमराव जान' के गाने 'इन आंखों की मस्ती के' राग भूपाली के, 'ये क्या जगह है दोस्तों', 'राग यमन' के स्वरों पर आधारित है। इन गानों के अतिरिक्त फिल्म 'रजिया सुल्तान' का गाना 'ए दिले नादान' 'राग पहाड़ी' में है। ऐसा अमर संगीत देने वाले खैय्याम जी आज भी हमारे बीच Living Legend के रूप में विद्यमान है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

1940–50 से लेकर 1970–80 तक अधिकतर फिल्मी संगीत की बागडोर इन्हीं संगीतकारों के हाथ में रही।

1963 से बतौर संगीतकार कार्य करने वाले उच्च कोटि के संगीतकारों में 'लक्ष्मीकांत–प्यारे लाल' का नाम भी शामिल है।

1980 के बाद जब फ़िल्मी संगीत में सुगम संगीत का प्रचलन ज्यादा बढ़ा उस समय में भी इन संगीतकार जोड़ी ने काफी सारी अविस्मरणीय रचनाएं दी। लक्ष्मीकांत जी ने हुस्न राम जी से मेण्डोलिन की शिक्षा ली।[3] तथा प्यारेलाल जिनके पिता स्वयं ट्रम्पेड बजाते थे उन्होंने 'ऐंथनी गानसल्वेज' जी से वायलिन बजाना सीखा।[4] इनकी रचनाओं में 1978 में प्रदर्शित फिल्म 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का गीत 'भोर भई पनघट पे' 'राग भैरवी' में रचित है। इसी के साथ अन्य रचनाओं में 1985 में प्रदर्शित फिल्म 'सुरसंगम' का गीत 'मैका पिया बुलावे' राग कलावती' में 'जाऊं तोरे चरण कमल पर वारी' 'राग भूपाली' में है। 1987 में प्रदर्शित फिल्म 'राम लखन' का गीत 'ओ राम जी बड़ा दुख दीना' राग मारू बिहाग के स्वरों पर आधारित है। इस संगीतकार जोड़ी ने और भी कई मधुर धुनें देकर श्रोताओं को हतप्रभ किया।

इस समय में अन्य संगीतकार 'रवीन्द्र जैन' के द्वारा दिया गया संगीत भी चर्चा में रहा। 1985 में 'राम तेरी गंगा मैली' का गीत 'इक राधा इक मीरा' जो कि 'राग भैरवी' में तथा सन् 1991 में प्रदर्शित फिल्म 'हिना' का गाना 'चिट्ठीऐ पंख लगा के उड़जा' 'राग पहाड़ी' में है काफी प्रसिद्ध हुए। फिर 1990 में 'लेकिन' मूवी आई जिसका संगीत 'हृदयनाथ मंगेशकर' ने दिया इस फिल्म के गीत 'सुनियो जी अरज हमारी', राग मांड में 'झूठे नैना बोले', राग बिलासखानी तोडी में, 'जा–जा रे' राग गुर्जरी तोड़ी पर आधारित है। इस फिल्म का संगीत बहुत पसन्द किया गया। इस तरह 1980 से 1990 के बीच में शास्त्रीय संगीत पर आधरित गीत सुनने को मिलते रहे। परन्तु 1990 के बाद फिल्म क्षेत्र में दिए जाने वाले संगीत का स्तर बहुत ही हल्का होता गया। इस समय में गम्भीर विषयों वाली फिल्मों का निर्माण न के बराबर रहा और एक्शन फिल्मों और रोमांटिक फिल्मों का बोलवाला ज्यादा रहा। इस बीच कुछ सादगी से भरी धुनें सुनने को मिली जिनमें साजन, लम्हे जिसके संगीतकार शिवकुमार शर्मा तथा हरि प्रसाद चैरसिया है जो जीता वही सिकन्दर, बाम्बे, परदेस आदि फिल्मों के नाम हैं। इस समय में नदीम श्रवण, जतिन–ललित, ए–आर रहमान, अनुमलिक द्वारा दिया गया संगीत सुनने में आया।

1990 के दशक के अंत में अर्थात 1998 में प्रदर्शित फिल्म 'हम दिल दे चुके सनम' का संगीत 'इसमाईल दरबार जी' ने दिया। इस फिल्म के गीत श्रेष्ठता की कसौटी पर खरे उतरे तथा उनमें रचनात्मक श्रेष्ठता भी देखने को मिली। इस फिल्म का गाना 'अलबेला सजन आयो री' जिसमें राग 'अहीर भैरव' की परम्परागत बंदिश का प्रयोग किया गया। 2002 में आई परीयोडिक फिल्म 'देवदास' भी सांगीतिक दृष्टि से उत्तम रही। इसमें एक बार फिर 'इसमाईल दरबार' ने तकरीबन गाने राग आधारित दिए। जिनमें 'वो चांद जैसी लड़की' जोकि 'राग यमन' के स्वरों पर आधारित है। सिलसिला ये चाहत का 'मिश्र किरवानी' पर आधारित है। 'काहे छेड़–छेड़ मोहे' में राग बसंत का चलन लिया गया है। इसके साथ ही इस गाने में 'बिरजू महाराज' ने भी स्वर दिए है। और इसी फिल्म का गाना 'बैरी पिया' राग 'मिश्र भैरवी' पर आधारित है।

सन् 2000 से जब ऐतिहासिक फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो शास्त्रीय संगीत पर आधारित गानों की गुंजायश बनी रही। इस समय में सन् 2001 में 'लगान' फिल्म में 'ए. आर. रहमान' द्वारा भारतीय वाद्यों के सुन्दर प्रयोग के साथ गानों को भी बहुत सुन्दर तरीकों से रचा गया तथा 2002 में प्रदर्शित फिल्म 'साथिया' का गीत 'चुपके से लग जा गले' राग भैरवी के स्वरों पर आधारित बहुत ही सुंदर गीत है। 2004 में फिल्म स्वदेश के गीत 'सांवरिया' में चारूकेशी के स्वरों का आभास होता है 2007 में प्रदर्शित फिल्म 'सांवरिया' का गाना 'थोड़े बदमाश हो तुम' जो कि राग यमन पर आधरित है। फिर 2009 में फिल्म 'जोधा अकबर' का गाना 'मन मोहना' राग भैरवी में रचित है। साथ ही दिल्ली–6 जिसमें रहमान जी ने 'बड़े गुलाम अली खां' द्वारा गाई बंदिश 'भोर भई' जो कि 'राग तोड़ी' में है, उसके साथ श्रेया की आवाज का प्रयोग कर फिल्म में प्रस्तुत किया है। इस तरह ए. आर. रहमान द्वारा दिए गए संगीत से श्रोता शास्त्रीय संगीत से अवगत होते रहे।

2001 में ही प्रदर्शित फिल्म 'गदर' में संगीत 'उत्तम सिंह' ने दिया। कुछ अन्य धुनों के साथ इस फिल्म में 'अजय चक्रवर्ती' तथा 'परपीन सुल्ताना' द्वारा गाई गई ठुमरी 'आन मिलो सजना' को प्रयोग किया गया जो कि 'राग खमाज' में है।

2007 में प्रदर्शित फिल्म 'भूल भूलैया' में संगीतकार 'प्रीतम' ने एक गाना दिया। 'मेरे ढोलना सुन' जो कि 'राग बागेश्वरी' के स्वरों पर आधारित है। और फिल्म 'जब वी मेट' का गाना 'आओ गे जब तुम ओ साजना' जो कि राग 'तिलक कामोद' के स्वरों पर आधारित है तथा साथ ही 'राशिद खां' जो कि शास्त्रीय गायक है उनके द्वारा इस गीत को गाना इस गाने की अन्य विशेषता थी। ये गाने उस साल के सफलतम गानों में प्रथम स्थान पर रहे। इस तरह 2010 तक यदा कदा शास्त्रीय संगीत पर आधारित रचनाएं सुनने को मिले। परन्तु 2010 से लेकर अब तक जो संगीत का दौर चल रहा है उसे संगीत की दुर्दशा का समय कहा जा सकता है। इस समय में यदि शास्त्रीय संगीत का प्रयोग किया गया है तो पाश्चात्यकरण के साथ जिसे 'फ्यूजन' का नाम भी दिया जा रहा है और वाद्यों के प्रयोग की बजाय केवल कुछ कम्पयूटराईज्ड धुनें लय के

लिए प्रयोग की जाती हैं जो गाने की सुन्दरता को नष्ट कर देती हैं।

2011 में 'सत्याग्रह' फिल्म का गाना 'रस के भरे तोरे नैन' जो कि राग दरबारी पर आधारित है सुनने में ठीक लगता है।

आज के समय में गीतों में जो बोल प्रयुक्त हो रहे हैं वह बहुत ही निम्न स्तर के हैं। पुराने समय में जहाँ गीतकार-एक एक गाने के बोल 100-200 बार लिखते हैं वहीं आज गानों में अश्लील शब्दों का प्रयोग हो रहा है। फिल्मों में तकनीक का प्रयोग उत्तम होने के कारण बहुत सी अच्छी फिल्में बनी है जिनमें 'कृष-3' का नाम उल्लेखनीय है और इस फिल्म ने सफलता भी हासिल की है परन्तु आज अच्छा संगीत फिल्म की सफलता के लिए आवश्यक नहीं माना जाता। केवल कुछ क्षणिक आनन्द देने वाली धुनों से ही संगीतकार अपने कार्य को संतोषजनक मानते हैं। गाने भी तब तक चलते हैं जब तक फिल्म चलती है। फिल्मों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित रचना तो दूर की बात है कुछ मधुर रचनाएं भी सुनने को नहीं मिल रही हैं। 2012 में प्रदर्शित फिल्मों में दबंग, अग्निपथ तथा बर्फी जैसी फिल्मों के गानों में अच्छा संगीत सुनने को मिल जाता है। 2013 में 'आशिकी-2' के गाने भी मधुरता, सरसता लिए हुए हैं। 'एक घड़ी' का गीत जो कि रेखा भारद्वाज द्वारा गाया गया है जिसके संगीतकार 'शंकर-एहसान-लॉय' हैं। इसमें भी 'राग भूपाली व देशकार' के स्वरों का आभास होता है। एक लंबे समय के बाद या फिर यूं कहें कि संगीत के इस हद तक गिरते हुए स्तर के दौर में किसी एक फिल्म में शास्त्रीय संगीत की शैलियों के प्रयोग के साथ इस पर आधारित धुनों का प्रयोग फिल्म संगीत के लिए किसी वरदान की तरह है और जिसमें यह संगीत दिया गया वह है 2014 में प्रदर्शित फिल्म 'डेढ़ ईश्किया' जिसके संगीतकार 'विशाल भारद्वाज' हैं जिसमें 'हमरी अटरिया' में परम्परागत धुन का प्रयोग है और यह 'भैरवी राग' पर आधारित है। साथ ही 'जगावे सारी रैना' जिसमें सितार का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया गया है तथा देस तथा खमाज जैसे रागों पर आधारित यह रचना बहुत ही सुंदर है। हालांकि सन् 2000 के बाद जो गाने बने वे शास्त्रीय रागों पर आधारित थे उनमें विशुद्ध रागों का प्रयोग तो नहीं है परन्तु इतना अवश्य है कि रागों के स्वरों पर आधारित गीत सुनने को जरूर मिलते हैं और ये गीत मधुरता व सरसता का सृजन भी करते हैं 70-80 तक तकरीबन हर गीत में रागों का प्रयोग अति सुन्दर तरीके से किया गया। यह आवश्यक नहीं था कि उसमें किल्ष्टता ही हो। यह बात उचित है कि एक ही राग में हमारे संगीतकारों ने न केवल क्लिष्ट बल्कि वो धुनें भी बनाई जो पूरी तरह राग आधरित होते हुए भी सुनने में मधुर व सरल हों तथा जो श्रोताओं के हृदय में उतरती चली गई। जैसे फिल्म 'राग रंग' गा गीत 'सरवी, ए री आली' राग यमन में रचित कठिन रचना है। वही 'जिया ले गयो जी' भी राग यमन में है परन्तु सुनने में सरल है। अगर ऐसी ही कुछ धुनें आज के समय में भी बनें तो श्रोता कैसे उन्हें नकार सकता है?

परन्तु आज तो स्थिति विपरीत है। केवल कुछ चुनिंदा गानों को छोड़कर फिल्म संगीत आज के समय में पूरी तरह पाश्चात्य धुनों का अन्धानुकरण कर रहा है। गानों में वाद्य वृन्द का प्रयोग भी रचनात्मकता की बजाय शोर-शराबे के लिए किया जाता है। स्वरों के सुन्दर प्रयोग की बात तो अब दुर्लभ सी प्रतीत होती है। केवल उन गानों को प्रचलित किया जा रहा है जिन पर कुछ क्षणों के लिए डिस्कों में झूमा जा सके। संगीत की इस दर्दुशा पर हमारे दिग्गज संगीतकारों ने भी चिन्ता अभिव्यक्ति की है। 'खैय्याम' जी से जब एक साक्षात्कार में आज के संगीत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा—'अल्लाह रहम् करे, आज संगीतकार संगीत का मजाक बना रहे हैं। यह केवल धम-धम धम है। आज से कुछ सालों बाद इस संगीत के विपरीत असर को महसूस किया जाएगा। संगीत का उद्देश्य मस्तिष्क को आराम देना होता है परन्तु आज का संगीत दिमाग को थका देता है।''[5] और उनका यह कथन शत-प्रतिशत सही है। आज 'मनोविज्ञान और संगीत' पर अनेक शोध कार्य हुए हैं जिसके अनुसार जहाँ शास्त्रीय संगीत मस्तिष्क की तरंगों को उद्वेलित कर सुकून पहुंचाता है वही शोर शराबे वाला भड़काऊ संगीत न केवल हृदय तथा मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डालता है बल्कि इस तरह के संगीत का किशोर आयु के बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस तरह का संगीत क्रोधी प्रवृति को बढ़ावा देता है।

अत: फिल्म संगीत निर्देशकों को इस बात पर विचार अवश्य करना चाहिए कि हमारा संगीत हमारी धरोहर है। हमारी सभ्यता तथा संस्कृति का प्रतीक है। जब हमारे पास रागों का इतना विस्मृत कर देने वाला खजाना है तो क्यों हम पाश्चात्यीकरण की ओर इतना रूख करें और भारतीय संगीत की सराहना तो पूरे विश्व में की जाती है। यदि आज के संगीतकार यह कह कर फिल्मों में शास्त्रीय धुनों के प्रयोग से इन्कार करते हैं कि आजकल श्रोता शास्त्रीय संगीत पसंद नहीं करते तो यह सत्य नहीं है। क्योंकि श्रोता आज भी माधुर्य से भरी धुनों को पसन्द करते हैं फिर चाहे वह रागों पर आधारित हो आज तक पुराने गानों का सुना जाना और नई फिल्मों में आए राग आधारित गानों की सफलता इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है और यदि यह कथन कुछ हद तक सही है भी तो फिल्म समाज का आईना होती है और संगीत उस फिल्म द्वारा दिए गए संदेश को लोगों तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है तो एक कलाकार तथा सामाजिक प्राणी होने के नाते एक संगीतकार का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह समाज को अपनी रचनात्मकता के माध्यम से कला के उस क्षेत्र की तरफ ले जाए जहाँ उसके मन-मस्तिष्क को सुकून के साथ वो रसात्मकता मिले जो उसे सकारात्मक ऊर्जा दे। जैसे कि हमारे दिग्गज संगीतकारों ने किया। यह कह कर शास्त्रीय संगीत की अवहेलना न करे कि यह आम लोगों के लिए नहीं है बल्कि शास्त्रीय संगीत को अपनी रचनात्मकता के साथ इस ढंग से पेश करे कि यह जन-जन का प्रिय संगीत हो जाए। क्योंकि हमेशा से ही फिल्म संगीत लोगों का प्रिय संगीत रहा है तो शास्त्रीय संगीत के प्रस्तार का इससे अच्छा माध्यम नहीं है। यदि आज के संगीतकार ऐसा करते हैं तो यह हमारी संगीत रूपी अमूल्य धरोहर की रक्षा में उनका सराहनीय योगदान होगा।

## पाद-टिप्पणियाँ

1. विमल, हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, सन् 2005, पृ. 73
2. जौहरी, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व अनेक समकालीन संगीतकार, सन् 2002, पृ. 27
3. काव्या, हिंदी चलचित्र जगत के सफलतम् संगीत निर्देशकद्वय लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, सन् 2008, पृ. 56
4. काव्या, हिंदी चलचित्र जगत के सफलतम : संगीत निर्देशकद्वय लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, सन् 2008, पृ. 62
5. www.hindustantimes.com/news-feed/entertainment/today-s-music-allah-rahem-kare-khayyamsarticle/-22201082aspx.

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

काव्या, लावण्या, कीर्ति सिंह, हिन्दी चलचित्र जगत के सफलतम संगीत निर्देशक द्वय लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21ए, 110002, सन् 2008

जौहरी, सीमा, फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार, अंसारी रोड, दरियागंज, राधा पब्लिकेशन्स 4378/4 बी सन् 2002

विमल, हिन्दी चिपत्रट एवं संगीत का इतिहास, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली सोमनाथ दल, सजन प्रकाशन 4378/4बी, 209 जे. एम. डी. हाऊस गली मुरारीलाल, 110002, 2005

इंटरनेट से प्राप्त सन्दर्भ